INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

मथुरा और महावन का शासक कुलचन्द्र यदुवंशी एवं महमूद गजनवी का मथुरा और महावन पर आक्रमण

CHANDRA SHEKHAR
Associate professor
Department of History
Singhania University
Pacheri Bari, Jhunjhanu
RJ- 333515

RANVIR SINGH
Research Scholar
Department of History
Singhania University
Pacheri Bari, Jhunjhanu
Mb. +91 9759055073

कुलचन्द्र यदुवंशी :-

महमूद गजनवी के आक्रमण से पूर्व मथुरा धन धान्य से सम्पन्न एक समृद्धशाली नगर था, महमूद गजनवी के आक्रमण के समय मथुरा पर कुलचन्द्र नामक यदुवंशी क्षत्रिय राजा शासन कर रहा था । कुलचन्द्र के अस्तित्व और वंश का अनुसंधान श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी ने करौली के यादव/जादौन क्षत्रिय राजाओं का उल्लेख करते हुए उनकी परंपरा मथुरा के राजाओं से संबन्धित बतलाई है। यदि वह ठीक है, तब उससे कुलचन्द्र के अस्तित्व और उसकी वंश-परंपरा पर प्रकाश पड़ सकता है। श्री चतुर्वेदी ने लिखा है- "प्राचीन ख्यातों से सिद्ध होता है कि विक्रम स० 936 (सन् 879 ई०) में इच्छपाल नामक एक यादव नरेश मथुरा का राजा थे। उनके दो पुत्र ब्रह्मपाल तथा विनयपाल हुए। इच्छपाल के उपरांत ब्रह्मपाल मथुरा का शासक हुआ तथा उसकी मृत्यु के उपरांत उनका पुत्र जयेन्द्रपाल (इद्रपाल) वि० स० 1023 (ई० 966) में गद्दी पर बैठा और वि० स० 1049 में उनका देहांत हुआ। उनके 11 पुत्र थे उनमें से ही एक महाराजा विजयपाल थे, जो वर्तमान करौली राज्य के मूल पुरुष थे उन्होंने अपनी राजधानी मथुरा से हटा कर मथुरा से लगभग 50 मील दूर पश्चिम की ओर, प्राचीन श्रीपथ तथा वर्तमान भरतपुर जिले के अंतर्गत, बयाना के समीप की पहाड़ी पर स्थापित की। उन्होंने वहां विक्रम स० 1097 (सन् 1040 ई०) में 'विजय मंदिर गढ़' नाम से एक सुद्रढ़ और विशाल दुर्ग का निर्माण किया, जो कि आज भी वहाँ उसी स्थिति में खड़ा हुआ अपनी अनुपम अजेयता का प्रमाण प्रस्तुत कर रहा है। राजधानी के उस स्थानान्तरण का कारण उनको पर्वत श्रेणियों के मध्य एक सुरक्षित स्थान पर स्थापित करना ही था, ताकि वह आये दिन के तत्कालीन मुसलमानी आक्रमणों का आखेट बनने से बच सकें। महाराजा विजयपाल अपने समय के एक बड़े प्रबल प्रतापी नरेश हुए, जिनको तत्कालीन शिलालेखों में 'महाराजाधिराज परम भट्टारक' लिखा है |[(1)]

इस प्रकार जयेंद्रपाल के 11 पुत्रों में से एक कुलचन्द्र थे जो कि महाराजा विजयपाल के अपनी राजधानी बयाना स्थानांतरित करने के बाद मथुरा व महावन के राज्य पर शासन कर रहे थे | इस प्रकार कुलचन्द्र यादव वंशीय राजा जयेंद्रपाल (इन्द्रपाल) का पुत्र और मथुरा राज्य का उत्तराधिकारी था वह महावन दुर्ग से अपना राज्य चला रहा था |

महावन व मथुरा पर महमूद गजनवी का आक्रमण :-

जब कुलचन्द्र मथुरा-महावन में राज्य कर रहे थे उनके शासन काल के दौरान भारत पर एक मुस्लिम आक्रमणकारी महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण किया, और वह भारत के अंदर तक लूटमार करते हुए मथुरा-महावन तक जा पहुंचा और वहां उसका सामना यादव वंशीय शासक कुलचन्द्र के साथ हुआ जो कि एक महान साहसी योद्धा थे | फरिस्ता ने लिखा है- वि० सं० 1074 (सन 1017) के वसंत में महमूद गजनवी विशाल सेना के साथ भारत पर आक्रमण किया | महमूद के सचिव अलउत्वी ने अपने ग्रन्थ "तारीखे यमीनी" में लिखा है कि मथुरा में लूटमार करने से पहले महमूद गजनवी को एक वीर सेनानायक कूलचन्द (कुलचन्द्र) से भीषण युद्ध करना पड़ा था जो कि वह वहां का शासक था | फ़रिश्ता ने भी लिखा है कि महावन के शासक कुलचन्द्र के साथ महमूद को कड़ा मुकावला करना पड़ा था, किन्तु कुलचन्द्र की हार हुयी |[2]

अलउत्वी के वर्णन को ग्राउस ने इस प्रकार उद्धृत किया है- "राजा कुलचंद का दुर्ग महावन में था। उसको अपनी शक्ति पर पूरा भरोसा था, क्योंकि कि तब तक कोई भी शत्रु उससे पराजित हुए बिना नहीं रहा था। वह ऐसे विस्तृत राज्य, अपार वैभव, अगणित वीरों की सेना, विशाल हाथी और सुद्रढ़ दुर्गों का स्वामी था, जिनकी ओर किसी को आँख उठा कर देखने का भी साहस नहीं होता था। जब उसे ज्ञात हुआ कि महमूद उस पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है, तब वह अपने सैनिक और हाथियों के साथ उनका मुकाबला करने को तैयार हो गया। अत्यंत वीरता पूर्वक युद्ध करने पर भी जब महमूद के आक्रमण को विफल नहीं किया जा सका, तब उसके सैनिक गढ़ से निकल कर भागने लगे, ताकि वे यमुना नदी को पार कर अपनी जान बचा सकें। इस प्रकार प्राय: 50,000 (पचास हजार) व्यक्ति उस युद्ध में मारे गये, अथवा नदी में डूब गये। तब कुलचन्द्र ने हताश होकर पहले अपनी रानी व बच्चों को और फिर स्वयं अपने को भी तलवार से समाप्त कर दिया। उस अभियान में महमूद को लूट के अन्य सामान के अतिरिक्त 185 सुन्दर हाथी भी प्राप्त हुए थे |[3]

महमूद गजनवी द्वारा मथुरा नगर की भीषण लूट :-

महावन में लूट-मार कर और वहाँ के मन्दिर-देवालयों को बर्बाद कर महमूद ने अपनी लड़ाकू व लुटेरी सेना के साथ यमुना नदी को पार किया और वह मथुरा के असुरक्षित नगर पर चढ़ दौड़ा। नगर में प्रवेश करते ही वह वहाँ के भव्य भवन, सुदर मंदिर-देवालय और उनके अपार वैभव को देख कर चकित रह गया। मथुरा के मदिरों में और विशेष रूप से यहाँ के कृष्ण जन्मस्थान वाले प्राचीन देवालय में सोने-चांदी की अनेक देव-मूर्तियाँ जवाहरात के आभूषण धारण किये हुए विराजमान थी । धर्म परायण राजा-महाराजा और सेठ-साहूकारों द्वारा भेंट की हुई अपार धन-सम्पत्ति वहाँ कई शताब्दियों से संचित होती रही थी। उस 'अतुल्य एवम् बहुमूल्य' खजाने को देख कर महमूद की ललचायी हुई आँखे खुली की खुली रह गई। उसने अपने सैनिकों को वहाँ लूट-मार करने का आदेश दिया। अलउत्बी ने महमूद के उस आक्रमण का विशद वर्णन किया है। उसने लिखा है, "नगर को यमुना की बाढ़ से बचाने के लिए उसके चारों ओर पक्की संगीन दीवार थी, जिसके दो द्वार नदी की ओर थे। नगर में दोनों बगल हजारों मकान और अनेक मंदिर बने हुए थे। वे सब अत्यंत मजबूत थे । उनके सन्मुख लकड़ी के खम्भों की कुछ अन्य इमारतें भी थी। महमूद ने आदेश दिया कि सब मंदिरों में आग लगा कर उन्हें घराशायी कर दिया जाय।

उस समय बीस दिनों तक नगर की लूट होती रही थी। उस लूट में जो अपार सामग्री मिली, उसमें शुद्ध सोने की बनी हुई मूर्तियाँ थीं, जिनकी आँखो में लाल जड़े हुए थे और जो बहुमूल्य रत्नों के आभूषण पहने हुए थीं । उनके अतिरिक्त बहुसंख्यक चाँदी की प्रतिमाएँ भी थीं । उन सबको ध्वंस करने के बाद जब लूट का सामान इकट्ठा किया गया, तब वह 100 से अधिक ऊँटो पर लादने लायक हो गया। लूटा हुआ सामान अनुमानत 30 लाख के मूल्य का होगा। उसके अतिरिक्त महमूद 5,000 (पाँच हजार) हिन्दुओं को भी अपने साथ गुलाम बना कर ले गया |[4]

डा० आशीर्वादलाल ने लिखा है, "उत्वी के कथन अनुसार उन मंदिरों में सोने की बहुमूल्य मूर्तियाँ थीं, उनमें पाँच मूर्ति पाँच-पाँच हाथ ऊँची थीं और एक में 50 हजार दीनार के मूल्य की लाल मणि जड़ी हुई थीं । एक अन्य मूर्ति में शुद्ध ठोस नीलम जड़ा हुआ था, जिसका मूल्य 4 सौ मिश्कल था। आक्रमणकारियों को अनेक मूर्तियों के नीचे गड़ा हुआ बहुत सा धन मिला । एक मूर्ति के चरणों के नीचे तो उसे चार लाख स्वर्ण मिश्कल के मूल्य का कोष मिला था । अनेक मूर्तियाँ चाँदी की बनी होने के कारण बहुमूल्य थीं। महमूद ने समस्त नगर को धूल में मिला दिया और उसका कोना-कोना लूट लिया। वृन्दावन में भी वध, लूट, दाह, हत्या और बलात्कार का कांड हुआ |[5]

कृष्ण-जन्मस्थान के मंदिर का ध्वंस :-

प्रभुदयाल मीतल ने ब्रज का इतिहास में कृष्ण-जन्मस्थान के बारे में लिखा है कि महमूद गजनवी की उस विनाश लीला का सबसे दुखदायी प्रसंग कृष्ण जन्मस्थान के उस प्राचीन और भव्य मंदिर का ध्वंस किया जाना था, जो प्राय: छह शताब्दी पूर्व चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा बनवाया था | उस काल में वह मंदिर मथुरा नगर के मध्य में बना हुआ था और उसके चारों ओर सैकड़ों मंदिर देवालयों और भवनादि थे | अलउत्वी ने उस मंदिर के विषय में लिखा है, "नगर के बीचो बीच एक मंदिर था , जो सभी इमारतों से अधिक विशाल और सुन्दर था। उसका यथार्थ वर्णन करना किसी प्रकार सभव नहीं है। उसके बारे में वहाँ के निवासियों का ख्याल था कि उसे मनुष्यों ने नहीं देवताओं ने बनाया है | सुलतान ने उसके सम्बन्ध में स्वयं लिखा है- 'यदि कोई व्यक्ति वैसी इमारत बनवाना चाहे, तो वह 10 करोड़ दीनार खर्च कर दो सौ वर्षों में भी वैसी नहीं बना सकेगा और वह भी तब, जब उसके बनाने में बहुत होशियार और तजुर्वेकार कारीगर लगाये जावें |" महमूद ने भारतीय स्थापत्य की उस अनुपम कलाकृति को नष्ट कर दिया और वहाँ की बहुमूल्य देव-मूर्तियों को तोड़ कर वह समस्त रत्न-राशि, सोना-चांदी और कीमती सामान लूट कर ले गया |

महमूद गजनवी का मथुरा पर आक्रमण ऐसा संहारकारी और यहाँ की लूट ऐसी भयानक थी कि उन्होंने पिछली सभी दुखांत घटनाओं को भुला दिया था। प्राय 500 वर्ष पहले हूणों ने मथुरा की बड़ी बर्वादी की थी, किंतु महमूद की विनाश-लीला उनसे कहीं बढ़ कर थी। हूणों ने धन के लोभ से मथुरा में लूट-मार तो खूब की, किंतु उन्होंने यहां के विशाल मंदिर-देवालयों को नष्ट नहीं किया था, क्योंकि कि उन्हें उनसे कोई धार्मिक विद्वेष नहीं था | महमूद लालची होने के साथ ही साथ धर्मोन्मादी भी था | उसने लूट-मार के साथ ही साथ यहां के प्राय सभी मंदिर-देवालयों को भी नष्ट कर दिया था | इस प्रकार हर्ष की मृत्यु के 370 वर्ष बाद मथुरा राज्य के सांस्कृतिक इतिहास की वह सबसे बड़ी दुखांत घटना थी |[6]

यद्यपि महमूद के आक्रमण से वह राजवंश बिखर गया, कुलचद्र की मृत्यु हो गई और विजयपाल पहले अन्यत्र चला गया था, फिर भी शेष भाइयों में से किसी का वहाँ राज्य बने रहने की संभावना जान पड़ती है, चाहे उसकी स्थिति कितनी ही दुर्बल क्यों न हो | महाबन से प्राप्त एक प्रशस्ति अभिलेख से ज्ञात होता है कि वि० स० 1207 में वंहा पर अजयपाल और वि० स० 1227 में हरपाल नामक राजाओं का शासन था | वे राजा कुलचद्र के ही वंशज होंगे | उस काल में यादव राजवंश के जो व्यक्ति मथुरा से हटे थे, उन्होंने कामवन, बयाना और करौली में विविध राज्यों की स्थापना की थी तथा वहाँ की पहाड़ियों पर उन्होंने सुद्रढ़ दुर्ग, दर्शनीय देवालय और सुन्दर सरोवर आदि का निर्माण कराया था। कालांतर में वे राज्य भी आक्रमणकारियों द्वारा संकट ग्रस्त हुए थे ।

यादव राजा कुलचद्र और उसके वंश का महत्व इसलिए अधिक है कि मथुरा के इतिहास में कृष्णकालीन अथवा उनके परवर्ती यादव राजाओं के पौराणिक विवरण के बाद उसी यादव वंश की स्वतंत्र राजसत्ता का ऐतिहासिक उल्लेख मिलता है और यह भी एक समकालीन विदेशी लेखक द्वारा किया हुआ। उस राजवंश से पहले मथुरा राज्य पर जिन महान् राजाओं का शासन रहा था, वे नाग राजाओं को छोड़कर सभी दूसरे स्थानों के थे। मथुरा राज्य तो उनके विशाल साम्राज्य का एक भाग मात्र था, जबकि वास्तविक सत्ता तो यादव वंशियों के ही हाथ में रही |[7]

सन्दर्भ :-

(1) ब्रज-भारती (वर्ष 12, अंक 4) पृष्ठ 21-22, व ब्रज का इतिहास द्वितीय खंड, प्रभुदयाल मीतल, पृष्ठ 129|
(2) ब्रज का इतिहास, प्रभुदयाल मीतल, पृष्ठ सं.126 |
(3) मथुरा-ए-डिस्ट्रिक्ट मेमोयर,(तृ०स०), पृष्ठ सं.32 |
(4) मथुरा-ए-डिस्ट्रिक्ट मेमोयर,(तृ०स०), पृष्ठ सं.32-33, ब्रज का इतिहास, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ सं.127 |
(5) दिल्ली सल्तनत,प्रथम संस्करण, पृष्ठ सं.53 |
(6) मथुरा-ए-डिस्ट्रिक्ट मेमोयर,(तृ०स०), पृष्ठ सं.32-33, ब्रज का इतिहास, प्रभुदयाल मीतल, पृष्ठ सं.128 |
(7) ब्रज का इतिहास, द्वितीय खण्ड,प्रभुदयाल मीतल, पृष्ठ सं.130 |

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.